ओ३म्



संध्या

भावार्थ दीपिका टीका सहित

ले० अमर चन्द गुप्त

पुस्तक मिलने का पता—

सुलतानीमल अमरचन्द आढ़ती

जगराओं मण्डी

जिला—लुधियाना (पंजाब)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

प्रकाशक
वेदप्रकाश ओमप्रकाश
जगराओं मण्डी (पंजाब)

तृतीय बार—१९६२ ई०
सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक
चौ० ब्रह्मसिंह
राज प्रिन्टिंग प्रेस, कनखल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दो शब्द

लाला अमरचन्द जी फिल्लौर वाले जगराओं मण्डी निवासी स्वाध्याय के अनुरागी हैं। इन का जीवन शैशव काल से ही व्यापार व्याप्त रहा है तथापि यथा कथंचित् लाला जी उच्च कोटि के विद्वानों के सम्पर्क में आते ही रहे हैं। इस कारण इनके संस्कार आरम्भ से ही सात्विक रहे हैं। इसके ही फल स्वरूप संध्या की यह "भावार्थ दीपिका टीका" है। इस टीका में इन के हृदय की लग्न स्पष्ट हो जाती है। भाव सीधे सादे तथा सरल समझ में आते हैं साधारण से साधारण जन भी इस टीका से लाभ उठायेगा.

दैवी सम्पद् को उन्नत करने के लिये सन्ध्या की उपासना प्रत्येक प्राणी के लिये आवश्यक है। समाधि भावना के लिये तथा क्लेशोच्छेदन के लिये तप, स्वाध्याय ईश्वर प्राणिधानात्मक जिस क्रिया का करना मानव मात्र के लिये नियत है उस कर्म की सिद्धि इस सरल टीका के स्वाध्याय से भली भान्ति हो सकती है। मेरा अपना ऐसा विश्वास है।

जगन्नाथ शास्त्री

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उपहार

जिन स्त्री पुरुषों को ईश्वर प्रेम की चाह है और अपने जीवन को सफल करने की लग्न है, यह संध्या रूपी पुष्पांजली उन सज्जन पुरुषों की सेवा में प्रेम के साथ भेंट करता हूं।

अमर चन्द गुप्त

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri



इस पुस्तिका के विषय में स्थान स्थान से प्राप्त महानुभावों को सम्मतियाँ--

१. मैंने आदि से अन्त तक इसे देखा है, आपका पुरुषार्थ प्रशंसनीय है। सर्व साधारण व्यापारी लाभ उठावें और भी उत्तम है।

श्री स्वामी गंगागिरि जी महाराज

(आचार्य गुरुकुल) रायकोट।

२. मुझे आपकी यह पुस्तिका पढ़ कर प्रसन्नता हुई, जितनी प्रतियां आप भेज सकें भेज दीजिए, मैं बाँटता रहूंगा।

स्वर्गीय श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज

वैदिक संस्थान खेड़ाखुर्द देहली (देहली)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

३. इस संध्या का दिन रात में किसी समय कोई भी बाल से वृध्द तक जो नर नरी आदि से अन्त तक नित्य पठन करेगा, वह नरक जीवनसे निकल कर स्वर्गीय जीवन बितावेगा, अन्त में परम शान्त रुप मोक्ष प्राप्त करेगा।

श्री स्वामी कृष्णानंद जी

४. आपकी संध्या पुस्तक प्राप्त हुई। देखकर बहुत आनन्द प्राप्त हुआ। कृपाया १५० कापी आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना को भेज दें।

श्री कीशोरी लाल

मन्त्री आर्य समाज

दाल बाजार लुधियाना

५. आपकी लिखी संध्या पर किताब मिली मैंने उसी रोज ही शुरु से आखिर तक पढ़ा। पढ़ने पर उसका पूरा लुत्फ हासिल हुआ इस में

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

संध्या के मन्त्र के अर्थ भी आगए हैं और साथ व्याख्या भी है जो बड़े विस्तार से लिखी गई है। फिर यह आसान भाषा में है जो सब की समझ में आसानी से आ जाती है। वाकई यह छोटी सी पुस्तक सन्ध्या करने वालों के लिये निहायत लाभदायक चीज़ है। मैं आपको इस के लिये बधाई देता हूं। इस के साथ जो प्रार्थनाएँ लिखी गई हैं, उन्हों ने इसे और भी मुफ़ीद बना दिया है।

पूज्य बाबू लभ्भूराम जी
रिटायर्ड प्लीडर (तलवरडी)
पटियाला।

६. आपकी लिखी हुई संध्या की एक कापी मिली पढ़कर दिल बहुत प्रसन्न हुआ आप को इसके लिये बहुत बहुत बधाई देता हूं। आशा करता हूं

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आप समाज की इस तरह सेवा करते रहेंगे।

श्री राम रखामल जी प्लीडर

किलोर।

७. आपकी संध्या पुस्तक मिली रहे दिल से मशकूर हूं, मैं इस किताब को पढ़ कर बहुत खुश हुआ, वाकई आपने बहुत मेहनत की है जो कि आपके दिली जज़बात का इजहार करती है। इस किताब को पढ़ कर ईश्वर भक्ति का चाव पैदा होता है। मैं आपको बहुत बधाई देता हूं।

श्री अर्जुन दास अग्रवाल

रिटायर्ड सुपरिंटेंट

इंजनीयर (लुधियाना)

८. आपने संध्या पुस्तक बड़े सुन्दर आकार और सुन्दर ढंग पर लिखी है। यह उपकार का कार्य किया है। यहां सामाजिक सज्जनों में इसका

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ज़िकर और जलसे में चर्चा की गई है। आप ५० प्रतियां भेज देवें, ताकि सज्जनों में दी जावें।

श्री बाबूराम जी गुप्ता

प्रधान आर्य समाज साबन बाजार
लुधियाना

६. मैंने आपकी लिखी हुई सन्ध्या देखी बहुत अच्छी पुस्तक उमदा ढंग की है। पचास प्रतियां भेज देवें।

श्री मोहन लाल गुप्ता जाखल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

❀ प्रस्तावना ❀

मैं एक साधारण व्यापारी हूं. आयु भर व्यापार ही करता रहा हूं. मेरे सौभाग्य से मुझे छोटी अवस्था से ही आर्य्य समाज के सत संगों और संतजनों के सदुपदेशों को सुनते का सौभाग्य मिलता रहा, सद् ग्रन्थों के स्वाध्याय का समय भी मिलता रहा, अपनी निर्बलताओं को दूर करने की चेतावनी और लौकिक व्यवहार को सुधारने की प्रेरणा भी मिलती रही यह सत्य है कि मानव जीवन दुर्बलताओं से पूर्ण है, पग २ पर ठोकरें लगते रहने से समय समय पर जागृति मिलती रही और सुधार का प्रयत्न जारी रहा, एकान्त में विचरने पर अपने जीवन में जहां अनेक निर्बलताओं का अन्धकार छाया हुआ प्रतीत होता था। वहां कुछ सुधार की ज्योति भी दिखाई देती थी, परन्तु नाम मात्र, फिर भी महर्षियों के इन वचनों से कुछ संतोष मिलता रहा कि यह काम जन्म

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जन्मान्तरों का है, घबराने और निराश होने की कोई बात नहीं है, श्रद्धा और विश्वास के साथ साधना करते जाना है।

साधना के लिए हमारे ऋषियों ने मनुष्य जीवन के सुधार के लिए सन्ध्या का निर्माण अत्युत्तमता के साथ कुछ ऐसे ढंग से किया है कि जिस में मानव जीवन को सफल बनाने के सब साधन विद्यमान हैं, गम्भीरता से विचारने पर पता लगता है कि मनुष्य शरीर का सब व्यवहार पाँच ज्ञान इन्द्रियों और पाँच कर्मेइन्द्रियों के अतिरिक्त मन, बुद्धि और आत्मा के सहयोग से चलता है, और शुद्ध विचार, शुद्ध आचार, सद् व्यवहार और सात्विक आहार ही मनुष्य को ऊंचा उठाकर मोक्ष दिला सकता है, और शुद्ध व्यवहार मनुष्य को नीचा गिरा कर नष्ट भ्रष्ट कर देता है।

सन्ध्या रूपी माला का एक २ मन्त्र मन बुद्धि

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

समेत ज्ञान इन्द्रियों और कर्म इन्द्रियों के दोषों को दूर करने का उपाय बतला कर इनको निर्मल बनाने का सरल ढंग बतला कर आत्मा का परमात्मा से मिलाप करा देता है, एकाग्र मनसे पढ़ और विचारने पर यह भेद सुगमता से समझ में आ जाता है, फिर साधक एकाग्र मन से श्रद्धा और विश्वास रख कर उत्साह के साथ प्रातः और सायं सन्ध्या का अमृत पान करता है, साधक जब तक संसार में जीता है अपने जीवन को सरल, सुखी, शांति के साथ नीरोग्य रहकर निष्काम भाव से सेवा करता हुआ व्यतीत करता है और मृत्यु के पश्चात् ईश्वर को प्राप्त करता है।

मैंने विद्वानों और महात्माओं के सन्ध्या पर विचारों को पढ़ सुन कर अपने जैसे साधारण व्यक्तियों (पुरुषों) की समझ में आ जाने योग्य सरल शब्दों में सन्ध्या के मन्त्रों का भावार्थ लिखा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

है, यह विद्वानों के विचारों और ईश्वर की प्रेरणा का फल है, मेरी न ऐसी समझ है न योग्यता है, यह सब कुछ भगवान् ने ही करा कराया है, मैं ऐसा समझता हूं। भगवान् जो कुछ मुझ से लिखवाता रहा मैं लिखता रहा, ईश्वर की इस देन को मैंने समय समय पर सज्जन पुरुषों, सन्तों, महात्माओं की सेवा में इस सन्ध्या मन्त्रों के भावार्थ सुनाये, तो उन्होंने मुझ पर अनुग्रह करके मुझे सम्मति दी कि मैं इसको छपवा दूं, मैंने इन्हीं की प्रेरणा से इसको छपवाने का साहस किया है।

मेरा कुछ अनुभव है कि इस प्रकार सन्ध्या के पठन पाठन की साधना करते रहने से मन कुछ टिकने सा लगता है और जीवन व्यवहार सरल और निर्मल होने लगता है, साधक मेरी निर्बलताओं को ध्यान में न रखते हुये इसका अध्ययन करेंगे, इसमें जो कुछ लाभ दायक हो

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उससे लाभ उठायेंगे, मैं ऐसी आशा रखता हूं।

अमर चन्द गुप्त
जगराओं मन्डी जिला लुधियाना

नम्र निवेदन

सन्ध्या प्रेमियों की सेवा में

इन चार बातों के अनुसार आचरण करते रहने से सध्या से तुरन्त शान्ति मिलती है।

१. निश्चित स्थान और

२. निश्चित समय में

३. निश्चित समय तक

४. श्रद्धा तथा प्रेम से प्रतिदिन दोनों समय सन्ध्या करना।

जहां तक हो सके सन्ध्या शांत, सुन्दर, सुहावने शुद्ध स्थान में होनी चाहिए, जहां के सब दृश्य प्रभु की याद दिलाते हों, और वहां का वायु-

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मंडल शीतल, शुद्ध, ईश्वर चिन्तन में सहायक हो, मन को एकाग्र करने वाला और प्रभु प्रेम में लवलीन बना देने वाला हो. यदि घर में कोई ऐसा स्थान हो तो वह भी पृथक होना चाहिए, ताकि मन लगने में कोई विघ्न बाधा न पड़े, और इस स्थान में प्रभु भक्तों के चित्र और भक्ति के गीत, छन्द, मन्त्र शोभा दे रहे हों, प्रभु के प्यारों का सत्संग हो, ऐसे पवित्र स्थान में आसन लगा कर बैठ जाइये, इस समय मन को सांसारिक धन्धों को हटा कर प्रभु के भजन कीर्तन में लगा देना चाहिए, मधुर स्वर में मन्त्र उच्चारण कर के साथ की साथ अर्थ पर विचार करते जाइए, जब मन किसी दूसरी तरफ़ जाने लगे तो बार बार उनको वापिस लौटा कर ईश्वर चिन्तन में लगाते रहिए और और जाँचते रहिए, कि मन विषय विकारों, सुख स्वादों की तरफ़ जाता

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

है ? और किसी की हानि करके अपना सुख साधना चाहता है ? या धर्म पुण्य- भलाई और सेवा के काम करके दूसरों को सुखी करना चाहता है ? कुकर्मों की तरफ जाता है तो बड़ी सावधानी से मन को कुकर्मों के दुःखदायी परिणामों की याद दिलाते रहकर मन को बुरे कर्मों से हटाते रहना है, ऐसा करते रहने से मन को बुरे कामों से घृणा हो जायेगी और मन उस तरफ जाने से रुक जायगा, अगर मन भले कामों की तरफ जाता है तो यह ईश्वर चिन्तन का शुभ परिणाम हो रहा है. चिरकाल तक इसका अभ्यास करते रहने से भलाइयों का स्वभाव परिपक्व होकर फिर तुमसे पाप कर्म न हो सकेंगे।

ईश्वर चिन्तन के समय ईश्वर के जिन गुणों का आप स्मरण या जप करते हों मन उसमें ही लगा रहना चाहिए, यह धीरे धीरे बिना उक्ताये

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

चिरकाल तक करते रहने से होगा, जन्म जन्मान्तरों के और इस जन्म के बुरे संस्कारों को जन्म जन्मान्तरों तक सुधारते रहने का अभ्यास करना है, तब जाकर सफलता मिलेगी, इसमें घबराने या निराश होने की कोई बात नहीं है, धीरज रख कर श्रद्धा और उत्साह के साथ प्रभु पर भरोसा रखकर इस निश्चय के साथ कि कोई भी किया हुआ भला काम निष्फल नहीं जाता है समय आने पर अवश्य अपना फल देता है, साधना करते जाइए जहां साधना का अन्त है वहां ही प्रभु मिलाप है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख
भाग भवेत्।

सब सुखी हों, सब रोग रहित हों, सब

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कल्याण का दर्शन करें, कोई दुःखी न हो।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥

तुम्हारे अभिप्राय एक समान हों, तुम्हारे अन्तःकरण एक समान हों, तुम्हारे मन एक समान हों, जिससे तुम्हारी संघ शक्ति दृढ़ हो।

लेखक—

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

संध्या

अर्थात्

ईश्वर मिलाप

ओ३म् भूर्भुवः स्व। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।ॐ

अर्थः हे प्रभो हमें सुमति प्रदान करो, हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में चलाओ।

आचमन मन्त्रः

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शंयोरभिस्त्रवन्तु नः ।

अर्थ हे सर्वप्रकाशक सर्वव्यापक सर्वअंतर्यामी सब शुभ कामनाओं के पूर्ण करने वाले और सब सुखों के भण्डार प्रभो मेरी शारीरिक, मानसिक,

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आध्यात्मिक शान्ति के लिए मेरे अन्दर और बाहिर शान्ति की अनन्त धाराओं से वर्षा करो जिससे मेरे रोम रोम को शान्ति प्राप्त हो और यह जल मेरे लिए अमृत रूप हो।

इन्द्रियस्पर्श मन्त्र

ओ३म् वाक् वाक्। ओ३म् प्राणः प्राणः। ओ३म् चक्षुः चक्षुः। ओ३म् श्रोत्रम् श्रोत्रम् ओ३म् नाभिः। ओ३म् हृदयम्। ओ३म् कण्ठः। ओ३म् शिरः। ओ३म् बाहुभ्यां यशोबलम्। ओ३म् करतल कर पृष्ठे।

भावार्थ—हे भगवान् मेरी वाणी और जिह्वा को पवित्र, पुष्ट और निरोग कीजिए, मैं विचार कर सत्य, मधुर और सब के हितकारी वचन बोलूं और मित भाषी बनूं, विना विचारे झूठ कटुवचन और किसी को हानिकारक शब्द नहीं बोलूं अपने स्वाद को वश में रखकर सादा

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सात्विक और आवश्यकता के अनुसार भोजन करूं, जिससे मेरी आयु, स्वास्थ्य और चित्त वृत्तियां ठीक रहें, स्वाद के वश में होकर राजसी और तामसी पदार्थों का सेवन न करूं, जिससे मेरी आयु, स्वास्थ्य और चित्त वृत्तियां खराब हों।

हे भगवान् मेरे पांचों प्राणों और फेफड़ों को पवित्र, पुष्ट और निरोग कीजिए। मैं इनको ठीक रखने के लिए शुद्ध वायु, शुद्ध जल, शुद्ध भोजन, प्राणायाम और व्यायाम करता रहूं। जिससे मुझे प्राण और फेफड़ों के रोग, तपेदिक, निमोनिया, दमा खांसी आदि न हों।

हे भगवान् मेरी आंखों और दृष्टि को पवित्र पुष्ट और निरोग कीजिये, मैं प्राणी मात्र को प्रेम और मित्र की दृष्टि से भाई बहनों के समान देखूँ। किसी को ईर्ष्या द्वेष और बुरी दृष्टि से न देखूँ।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हे भगवान मेरे कानों और सुनने की शक्ति को पवित्र पुष्ट और निरोग कीजिए, मैं सदा तेरे गुण कीर्तन और सन्तों के सद् उपदेशों और सब के हित की बातों को ही सुनता रहूं। कभी निन्दा, चुगली, बुरी संगत, विषय-विकारों और किसी के अहित की बातों को न सुनूँ।

हे प्रभो मेरी नाभि और वीर्य को पवित्र पुष्ट और नीरोग कीजिए, मैं हर प्रकार से वीर्य की रक्षा करता हुआ अपने शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की उन्नति करने में लगा रहूं।

हे प्रभो मेरे अन्तःकरण को पवित्र, पुष्ट और नीरोग कीजिए, मेरे हृदय से अज्ञान रूपी अंधकार दूर होकर इस में शुद्ध ज्ञान की ज्योति जलती रहे, आप से सच्चा अनुराग और प्राणी मात्र से प्रेम हो, मेरे हृदय में सदा शुभ भावनाएं जागृत होती रहें, मेरा मन एकाग्र हो, शिव संकल्प वाला

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

और विषयों से चलाय मान न हो।

हे प्रभो मेरे कण्ठ और आवाज को पवित्र पुष्ट और नीरोग कीजिए, मेरी आवाज मीठी हो और सब को सुखी करने वाली हो।

हे प्रभो: मेरे सिर और दिमाग को पवित्र, पुष्ट और निरोग करें, मेरा ज्ञान निर्मल हो, मेरे विचार उच्च और धार्मिक हों, मैं सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को सुनने, विचारने और मनन करने वाला बनूँ।

हे प्रभो मेरी भुजाओं और हाथों को पवित्र पुष्ट और नीरोग कीजिए, निर्बलों की रक्षा और प्राणी मात्र की निष्काम सेवा से प्राप्त किया हुआ मेरा यज्ञ और बल निर्मल हो।

मार्जन मन्त्रः

ओ३म् भू पुनातू शिरसि। ओ३म् भुवः पुनातु नेत्रयोः। ओ३म् स्वः पुनातु कण्ठे।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ओ३म् महः पुनातु हृदये। ओ३म् जनः पुनातु नाभ्याम। ओ३म् तपः पुनातु पादयोः। ओ३म् सत्य पुनातुपुनः शिरसि। ओ३म् खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र॥

भावार्थः--प्राणाधार प्रभु मेरे शिरको पवित्र करें, दुःख विनाशक प्रभु मेरे नेत्रों को पवित्र करें, सुख स्वरूप प्रभु मेरे कण्ठ को पवित्र करें, महान स्वरूप प्रभु मेरे हृदय को महान बनाए, जगत के उत्पत्ति करता प्रभु मेरी नाभि को पवित्र करें, तप स्वरूप प्रभु मेरे पाओं को पवित्र करें। सत्यस्वरुप प्रभु मेरे सिर को फिर पवित्र करें, सर्वव्यापक प्रभु मेरे सब अंगों को पवित्र करें।

प्राणायाम मन्त्रः

ओ३म् भूः। ओ३म् भुवः। ओ३म् स्वः।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ओ३म् महः । ओ३म् जनः । ओ३म् तपः
ओ३म् सत्यम् ॥

भावार्थः–हे प्रभु आप प्राणाधार हैं, सर्व दुखविनाशक हैं, सब सुखो के दाता हैं, महान स्वरुप हैं, जगतपिता हैं, दुष्टों के दण्ड दाता हैं, सत स्वरुप हैं, ।

अघमर्षण मन्त्रः

ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्याजायत ततो रात्र्यजायत । ततः समुद्रो अर्णवः ॥ १

भावार्थ—ज्ञान स्वरूप ईश्वर ने अपनी सामर्थ से सृष्टि का ज्ञान और सृष्टि को रचा, फिर प्रलय को और फिर जल के बादल और समुद्र बनाये ।

ओ३म् समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥२

जगत को वश में रखने वाले प्रभु ने समुद्र के बाद काल के विभाग दिन रात महीने और वर्ष रचे ।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ओ३म् सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथ्वीं चान्तरिक्षमथो स्वः।

विधाता ने पहिले की तरह सूर्य, चांद, तारे द्यूलोक, पृथ्वी, आकाश को और उसमें घूमने वाले लोक लोकान्तर और प्राणीमात्र को रचा, जैसा पहले कल्पों में रचा था॥

हे प्रभु आप इस ब्रह्मांड के रचने वाले, पालन पोषण करने वाले, और संहार करने वाले हैं। आपके नियम में यह सब कुछ चल रहा है, आपकी आज्ञा के बिना पत्ता तक नही हिलता, आपकी कृपा से ही सब को विजय प्राप्त होती है, हम अपनी किसी भी सफलता पर अभिमान नहीं करेंगे और न ही अपने को दीन हीन, तुच्छ, असमर्थ समझ कर इस अमूल्य जीवन को नष्ट भ्रष्ट करेंगे।

मनसा परिक्रमा मन्त्र.

ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षिता दित्या इषवः तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विषंमस्तं वो जम्भे दध्मः ॥

भावार्थ——पूर्व की तरफ अग्नि रूप ईश्वर हमारी उन्नति के लिए आगे बढ़ने और हमें बंधन रहित करने के लिए, सूर्य और आदित्य विद्वानों द्वारा हमारी रक्षा करता है, हम सूर्य को, आदित्य विद्वानों को, रक्षा करने की भावना को बारम्बार नमस्कार करते हैं, जो हम से द्वेष करता है या जिससे हम द्वेष करते हैं, हम निर्वैर होकर इस द्वेष भावना को प्रभु के न्याय पर छोड़ कर सब से प्रेम करते रहेंगे।

ओ३म् दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपति स्तिरश्चि-राजी रक्षिता पतिर इषवः। तेभ्यो नमो ऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि य वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥ २

भावार्थ—दक्षिण दिशा में ऐश्वर्य शाली प्रभु की

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

प्राप्ति के लिए इन ऐश्वर्यों की, सुख सम्पदा की, बल विद्या की, प्राप्ति और वृद्धि हो जाने पर हमें मर्यादा में चलाने और टेढ़ी चाल से बचाने के लिए वह भगवान पूज्य पितरों द्वारा हमारी रक्षा करता है, पूज्य पितरों को रक्षा करने की भावना को और ऐश्वर्यशाली प्रभु को हम बारम्बार प्रणाम करते हैं। जो हम से द्वेष करता है या जिससे हम द्वेष करते हैं इस द्वेष भावना को प्रभु के न्याय पर छोड कर हम द्वेष रहित होकर सबसे प्रेम करते रहेंगे।

ओ३म् प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षिताऽन्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्य नमो रीक्षतृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः॥ ३

भावार्थ—पीठ की तरफ पश्चिम दिशा में सर्वश्रेष्ठ प्रभु की प्राप्ति के लिए, इन विषय भोगों को सांप की विष और इनके दोषों का चिन्तन

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

करते हुए इनसे विरक्त होने का अभ्यास करते रहेंगे. विषयों से विरक्त महापुरुषों के जीवन और उनके सद्उपदेश हमारी रक्षा करते हैं, ऐसे विरक्त महापुरुषों के लिए, रक्षा करने की भावना और सर्व श्रेष्ठ प्रभु के लिए हम बारम्बार नमस्कार करते हैं, जो हमसे द्वेष करता है या जिस से हम द्वेष करते हैं इस द्वेष भावना को प्रभु के न्याय पर छोड़ कर हम द्वेष रहित होकर सबसे प्रेम करते रहेंगे।

ओ३म् उदीची दिक्सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु / योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः। ४

भावार्थ—बाईं ओर उत्तर दिशा में शान्ति के भण्डार प्रभु की प्राप्ति के लिए हम उसकी ओर आंखें उठाये देख रहे हैं। और वह भगवान

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हमारे हृदय में अमृत भर रहे हैं, बाहर के विषयों से अन्तर्मुख हुए हम अमृत का स्वाद ले लेकर मस्त हो रहे हैं तृप्त हो रहे हैं, आत्मा के दर्शनों से निर्मल हुए परमात्मा के भक्त हमारी रक्षा कर रहे हैं, इन भक्तों के लिए, रक्षा करने की भावना के लिए, शान्ति के भण्डार प्रभु के लिए हम बारम्बार नमस्कार करते हैं, जो हमसे द्वेष करता है या जिससे हम द्वेष करते हैं, इस द्वेष भावना को प्रभु के न्याय पर छोड़ते हुए निर वैर होकर सबसे प्रेम करते रहेंगे।

ओ३म् ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्मा षग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः । तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु । योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥५

भावार्थ—नीचे की तरफ़ पृथ्वी की तरह स्थिर हुए हम अपनी जीवन ज्योति जलाने के

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

लिए कर्म में कुशल होकर सर्वव्यापक प्रभु की प्राप्ति के लिए उसकी छत्र छाया में उसकी ओर बढ़ते जा रहे हैं, पृथ्वी से नित्य उगने वाली औषधियों तथा वनस्पतियों से नित्य नया जीवन और उत्साह प्राप्त कर रहें हैं, इस काम में स्थिर, दृढ़, अचल प्रभु के भक्त हमारी रक्षा करते हैं. इन भक्तों को, रक्षा करने की भावना को. सर्व-व्यापक प्रभु को हम बारम्बार नमस्कार करते हैं, जो हमसे द्वेष करता है, या जिससे हम द्वेष करते हैं इस द्वेष भावना को प्रभु के न्याय पर छोड़ते हुए निर्वैर होकर सबसे प्रेम करते रहेंगे।

ओ३म् ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपति श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमो-ऽधि पतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नमः इषु-भ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥६

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

भावार्थ—ऊपर की तरफ सबसे महान् प्रभु की प्राप्ति के लिए संसार के विषय भोगों प्रलोभनों पर विजय प्राप्त करते हुए उसकी ओर बढ़ते जा रहे हैं, जिन भक्तों ने तप और साधना से प्रभु को प्राप्त किया है और प्राणिमात्र पर उपकारों की वर्षा कर रहे हैं वह हमारी रक्षा करते हैं, एसे भक्तों को, रक्षा करने की भावना को, महान् प्रभु को बारम्बार नमस्कार करते हैं, जो हमसे द्वेष करता है या जिससे हम द्वेष करते हैं हम निर्वैर हो कर इस द्वेष भावना को प्रभु के न्याय पर छोड़ते हुए सबसे प्रेम करते रहेंगे।

हे प्रभु आप छहों दिशा में विराजमान हो कर हर प्रकार से हमारी रक्षा करते हैं और हमारी उन्नति के लिये जीवन यात्रा को चलाने के लिये अनेक प्रकार के साधन प्रदान करते हैं, इसके लिये हम आपका बारम्बार धन्यवाद करते हुये आपको नमस्कार करते हैं। हम प्राणी मात्र से निर्वैर होकर सबसे प्यार और प्रेम का बर्ताव करेगें।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अथ उपस्थान मन्त्रः

ओ३म् उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम् । देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१

भावार्थ—हम सृष्टि और जीव आत्मा का साक्षात् करते हुए देवों के देव सबसे उत्तम ज्योति स्वरूप प्रभु को प्राप्त होते हैं, जो प्राप्त करने योग्य है।

ओ३म् उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्य्यम् ॥२

भावार्थ—इस सृष्टि के सकल पदार्थ सूर्य, चांद, तारे बिजली, नदी, नाले, समुद्र, पहाड़, फल-फूल, पत्तों की विचित्र बनावट, रात-दिन का निकलना, जीवों की जन्म मृत्यु, इस सृष्टि का अटल नियम उस सर्वव्यापक, सर्व अन्तर्यामी सर्वत्र सर्वेश्वर नियन्ता के दर्शन कराने के लिए,

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हर प्रकार का ज्ञान, और रास्ता दिखाने के लिए साधन रूप से झण्डियों का काम देते हैं।

ओ३म् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ॥३

भावार्थ—उपासकों को, अपने भक्तों को शक्ति शान्ति और जीवन का देने वाला अद्भुत प्रभु हमारे हृदय में प्रकाशित हो रहा है, वही सबको प्रकाश का देने वाला और सबका जीवन आधार जड़ चेतन जगत का आत्मा, और तीनों लोकों में समाया हुआ है, उसकी सेवा में हम सर्वस्व अर्पण करते हैं।

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतँ श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्र-

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

वाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरद शतं भूयश्च शरद शतात् ॥४

भावार्थ—वह प्रभु सर्वहितकारी है, सर्वद्रष्ठा है, रास्ता दिखाने वाला है, शुद्ध पवित्र ब्रह्म है, हमारे सन्मुख प्रकाशित हो रहा है, उसकी कृपा से हम सब सौ वर्ष तक स्वतन्त्र होकर, स्वस्थ रहकर, परोपकार के काम करते हुए और प्रभु का गुण कीर्तन सुनते सुनाते हुए जीते रहें, इससे अधिक जीयें तो इसी प्रकार जीयें, पराधीन और दीन होकर, बीमार और, पापी बन कर न जीयें।

गायत्री मन्त्रः

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

भावार्थ—प्राणाधार, दुखविनाशक, सुखस्वरूप, प्रभु के शुद्ध स्वरूप तेज को हम अपने हृदयों

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

में धारण करते हैं, जो धारण किया हुआ तेज हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में चलावे और कुमार्ग से बचाये।

नमस्कार मन्त्रः

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।

भावार्थ—शान्ति स्वरूप और शान्ति देने वाले, आनन्द स्वरूप आनन्द देने वाले, मंगलमय कल्याण स्वरूप मंगल और कल्याण करने वाले प्रभु आपके चरणों में बारम्बार नमस्कार॥

ओं शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri



का

संक्षिप्त अर्थ

हे भगवान् हमारी सब शुभ कामनायें पूर्ण हों और हमें शान्ति प्राप्त हो, हमारा शरीर पवित्र, पुष्ट और निरोग्य रहें, हमारा यश और बल निर्मल हो, हम सदैव आपके गुणों का स्मरण करते रहें, आपने ही इस संसार की रचना की है, आपके ही अटल नियम में बंधा हुआ यह संसार चक्र चल रहा है, आपकी आज्ञा के बिना पत्ता नहीं हिलता, इसलिए हम अपने किसी भी कार्य की सफलता पर न अभिमान करेंगे और न ही अपने को दीन, हीन, तुच्छ असमर्थ समझ कर निरुत्साह होकर अपने मनुष्य जीवन को असफल बनायेंगे। आप हर समय, हर स्थान पर हमारे अंग संग रह कर हमारी रक्षा करते हैं, और हमारी उन्नति के लिए

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हर प्रकार के साधन हमको प्रदान करते हैं, हम आपका बार-बार धन्यवाद करते हुए आपको नमस्कार करते हैं। हम द्वेष रहित होकर सबसे प्रेम करते रहेंगे, इस नाशवान शरीर और अमर आत्मा के तत्व को समझ कर आपके शुद्ध स्वरूप के दर्शन करेगें, इस सृष्टि की नाना प्रकार की रंग बिरंगी विचित्र शक्ल सूरतों में विराजमान आपको देखने की दिव्य दृष्टि प्राप्त करके अपना उद्धार करेंगे, आप हमारे अज्ञान अंधकार का नाश करके शुद्ध ज्ञान का प्रकाश करते हैं, सबके जीवन आधार और विश्व के आत्मा हैं, सबसे पूजनीय हैं, उपासकों को शक्ति और शान्ति देने वाले हैं. हे प्रभु हम आपके चरणों में सर्वस्व अर्पण करके उसके बन्धन से मुक्त होकर आपसे प्रार्थना करते हैं, कि हम सौ वर्ष तक स्वतन्त्र और स्वस्थ रह कर सदाचार पूर्वक आपके गुण कीर्तन करते हुए अपना जीवन व्यतीत करें, कभी पराधीन और दीन न हों, हे तेज के भण्डार शुद्ध स्वरूप

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

प्रभु हमें सुमति देकर हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में चलावें, हमारी बुद्धि दुखों में घबरा कर और सुखों में फूल कर तुमको भूलने वाली न हो और स्वार्थ त्याग कर सदैव सत्य, अहिंसा और सबकी भलाई के लिए ठीक २ निर्णय करके संसार में सुख शान्ति स्थापित करने वाली हो, हे शांति के भण्डार, आनन्द स्वरूप, मंगलमय कल्याणकारी भगवान इस अबोध बालक, बालिकाएं अपने हृदय के उद्गार, श्रद्धा के फूल प्रेम के साथ आपके चरणों में अर्पित करते हैं, इसको स्वीकार करके हमारा उद्धार कर देना, हमारे जीवन को अमर बना देना और हमें आशीर्वाद देना कि हम असत्य से सत्य की ओर निर्भ्रांत होकर ज्ञान के उजाले में निष्काम कर्म करते हुए जन्म मृत्यु के बन्धन से छूटने का उपाय करते हुए आपकी छत्र-छाया में आपकी तरफ बढ़ते चले जाएं और आपके प्रेम पात्र बने रहें।

ओं शांति ! शांति !! शांति !!!

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

प्रार्थना

(१)

हे भगवान मैंने जो शुभ काम किया है। और प्राणीमात्र की जो निष्काम सेवा की है। मेरे शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की जो शुद्धि हुई है, और मुझे जो सुख-सम्पदा के साधन आपने दे रखे हैं वे सब तेरी कृपा का फल है मैं बड़े प्रेम के साथ सब कुछ तेरे चरणों पर अर्पित करता हूं। स्वीकार कर कृतार्थ करना प्रभु बालक बालिकाएं समझ कर मेरी भूलों को क्षमा करना। मुझे पापों से बचाते रहना। ऊपर उठने की प्रेरणा करते रहना और गिरने से बचा कर सहारा देते रहना। मेरी इस हार्दिक विनय को स्वीकार करना।

ओं शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

(२)

हे ! परमपिता परमेश्वर तू मेरा परम् हितैषी है। मेरे हित और कल्याण को तू पूर्ण रूप से जानता है परन्तु मैं नहीं जानता कि मेरा सच्चा हित किस में है। मैं नम्रता पूर्वक तेरे चरणों में विनय करता हूं कि आपने वही कुछ करना जिसमें मेरा कल्याण हो। चाहे मैं दुःखी रहूं या सुखी रहूं, हानि हो या लाभ हो, किसी की मृत्यु हो या जन्म हो, चाहे संकटों से घिर जाऊँ या खुशियों से घर भरपूर हो जाये दोनों अवस्थाओं में तेरी कृपा, तेरा अनुग्रह समझकर न अधीर रहूंगा न फूल कर तुझको भूलूंगा। अपनी बुद्धि को स्थिर रखने का अभ्यास करता रहूंगा। और अपने प्रत्येक कर्म से अपनी चित्त शुद्धि करता हुआ जीवन को सफल बनाऊंगा, नम्रता पूर्वक चित्तको तेरे चरणों में लगायें रखूंगा दृढ़ निश्चय के साथ आप पर पूरा भरोसा रखूंगा कि आप जो कुछ भी करते हैं। मेरे भले के लिये करते हैं।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हे प्रभु तेरी छतर छाया हम सब पर बनी रहे। हमारा परिवार, हमारा समाज, हमारा देश, इस संसार के सब नर नारी तेरे सच्चे भक्त बनें, सच्चे प्रेमी बनें, ब्रह्मचारी बनें, आज्ञाकारी बनें, सदाचारी बनें और प्राणीमात्र की निष्काम सेवा करके अपने जीवन को सफल बनायें। हर समय आपको, मौत को, बुढ़ापे को, बिमारियों को और दुःखों को याद रखते हुये कोई पाप कर्म न करें। हे प्रभु हमें ऐसी बुद्धि प्रदान करो जो दुःखों में घबराने वाली न हो और सुखों में फूल कर अपने आप को भूलने वाली न हो। हमारी बुद्धि के निर्णय सचाई और अहिंसा के आधार किये हुये संसार में सुख, शान्ति स्थापित करने के लिये दृढ़ और निश्चित हो ताकि हामारा मार्ग सीधा और सरल रहे। हे प्रभु हमें असत्य से सत्य की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर, मौत से मोक्ष की ओर ले चलो। इस विनय को स्वीकार करो।

ओं शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

(३)

हे भगवान् मैं तेरे सन्मुख प्रतीज्ञा करता हूं कि मैं अपनी बुद्धि को शुद्ध, निर्मल, स्थिर बना कर सन्मार्ग में चलूँगा, और कुमार्ग से बचता रहूंगा। मन को एकाग्र, शिव-संकल्प वाला बनाऊंगा। इन्द्रियों के विषयों में संयम रखकर सब की भलाई के काम निष्काम बुद्धि से करता रहूंगा। मैं सत्य और मधुर बोलूँगा, आखों से पवित्र देखूंगा, कानों से पवित्र सुनूंगा, शिर से पवित्र सोचूंगा, हाथों से सेवा करुंगा, और सेवा करने के लिये ही पाओं से चलूँगा अपनी साधन सामग्री को प्राणी मात्र की सेवा का साधन बनाऊंगा और अपनी आत्मा पर जमी हुई विषय विकारों की मैल को धोकर आत्मा की निर्मल ज्योति को इस शरीर रूपी चिमनी द्वारा खूब चमकाऊंगा। । अर्थात मेरे प्रत्येक कर्म से दूसरों की भलाई के काम होते रहेंगे। सब को अपनी आत्मा जैसा समझ कर सब के कल्याण के लिये अपना सब कुछ भेंट चढ़ादूंगा और तुम को

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दिखा दूंगा कि जन्म जन्मान्तरों के बुरे संस्कारों के काले धब्बे जो मेरी चादर में लगे हुये थे, उनको धोने में लग रहा हूं। इस के लिये मुझे बल और साहस देना।

ओं शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

(४)

हे भगवान मैं ईमानदारी, सचाई और मेहनत से धर्म के अनुकूल धन कमाऊंगा। स्वार्थ वश हो कर लोभ से किसी का धन और हक़ नहीं छीनूंगा और प्राप्त हुये धन को सब की भलाई में खर्च करूंगा, इस धन से अपनी उचित आवश्यकताओं को ही पूरा करूंगा क्योंकि मैं जन्म दिवस से ही संस्था और सन्सार का ऋणी (कर्जदार) हूं मेरे पास जो कुछ है मुझे इन से ही मिला है। मैं जीवन भर इस ऋण को चुकाने का यत्न करता रहूंगा। मैं कभी भी अपने आप को इस का स्वामी नहीं समझूंगा क्योंकि यह सब तेरा है। मुझे ट्रस्टी (trustee) के रूप में आप ने दे रखा है इस अमानत को ठीक रखने का, ठीक उप-

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

योग करने का मैं ज़िम्मेवार हूं। हे भगवान मुझे
ऐसी शक्ति देना कि मैं समय आने पर अपनी
आन, धर्म, और देश के हित के लिए अपना
सर्वस्व न्यौछावर करके और अपने प्राणों को
बलिदान करके प्रसन्नता पूर्वक इस ऋण से मुक्त
हो जाऊं।

ओं शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

(५)

मैं ब्रह्मचारी बनूंगा, सदाचारी बनूंगा, न
नारी को माता, बहन, पुत्री और भाई, पिता औ
पुत्र समझ कर सबसे प्यार करूंगा, प्रलोभनों
फंस कर सीधे रास्ते से नहीं हटूंगा, संकट आ
पर, विघ्न बाधाएं पड़ने पर, भ्रम में पड़कर न घ
राऊंगा न हैरान परेशान हूंगा, खुशियों ऐश्व
और सुखों में न फूलूंगा, और न अहंकार करूंग
एक मिन्ट में समाप्त होने वाली जिन्दगी को अप
नहीं समझूँगा, ऐसे समय में तेरी याद, तेरा सहा
तेरा भरोसा, तुझ पर विश्वास रखकर, तुझ
शक्ति प्राप्त करके मोह में न पड़ कर कर्त

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

परायण बना रहूँगा । प्रलभनों पर विजय प्राप्त करूँगा ऐसी उलझनों के समय मेरा ध्यान रखना तेरा ही सहारा है ।

ओं शान्ति ! शान्ति ! ! शान्ति ! ! !

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

प्रतिज्ञा

हे प्रभु मैं तेरे सन्मुख प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अपने धन्धे को ही यज्ञ रूप बना कर नर-नारी की सेवा का साधन बनाऊंगा। इस के मल धोकर इस को निर्मल बना दूंगा। अपने साथ काम करने वालों की अवश्यकताओं का, उनके सुख दुःख का, पूरा ख्याल रखूँ गा। अपने साथ लेन देन व्यवहार करने वालों को अपना रूप समझ कर सब के साथ एक सा शुद्ध बर्ताव करूंगा। माल शुद्ध तोल पूरा, और उचित भावों में लेने देने का ख्याल रखूँगा। समय पर भुगयान करने का ध्यान रखता हुआ अपनी शक्ति भर सब को सुविधा देने का ध्यान रखूँ गा और अपना आहार, व्यवहार अपनी शारीरिक, मानसिक, आर्थिक शक्ति के अनुसार ही करूंगा। अपनी प्रसन्नता,

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सुख, शान्ति स्वास्थ्य की उन्नति करने में लगा रहूंगा। जहां तक मेरी शक्ति में होगा अपने धन्धे को ही ऊंचा से ऊंचा करने का यत्न करता रहूँगा। प्रलोभनों में आकर दूरों के धन्धे में पड़ने से बचता रहूँगा। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये कोई न कोई धन्धा करना है। मैं इस में विघ्न नहीं डालूंगा। मैं अपने जीवन व्यवहार में तेरी आज्ञा को पालन करने का साधन समझता हुआ इस बात का ध्यान रखूंगा, कि आप सब में विराजमान हैं। तुझे रिझाने को ही मैंने जग का व्यवहार करना है। मेरे चंचल मन को बागडोर पकड़े रखना, और सावधान करते रहना। मुझे सन्मार्ग में चलने की शक्ति प्रदान करना। तेरी कृपा से ही मेरा बेड़ा पार होगा।

ओं शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

भजन

(१)

मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान तुम्हारे चरणों में
यही विनती है पल २ छिन २ रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
चाहे अग्नि में मुझको जलना हो चाहे काँटों पर मुझको चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥
संकट ने मुझको घेरा हो चारों ओर अन्धेरा हो।
पर चित्त न डगमग मेरा हो रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥
चाहे वैरी सब संसार बनै मेरा जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥
चाहे बादशाह और वजीर बनूं चाहे गृहस्थी बनूं या फकीर बनू।
चाहे कितना ही छोटा हकीम बनूं रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

(२)

तेरे दर को छोड़ कर किस दर जाऊं मैं।
सुनता मेरी कौन है किसे सुनाऊं मैं ॥
जब से याद भुलाई तेरी लाखों कष्ट उठाये हैं।
क्या जानूं इस जीवन अन्दर कितने पाप कमाये हैं ॥

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हूं शर्मिन्दा आपसे क्या बतलाऊं मैं। तेरे दर को०
मेरे पाप कर्म ही तुझ से प्रीत न करने देते हैं।
कभी जो चाहा मिलूं आपसे रोक मुझे ये लेते हैं॥
कैसे स्वामी आपके दर्शन पाऊं मैं। तेरे दर को०
तू है नाथ वरों का दाता तुझ से वर सब पाते हैं।
ऋषि मुनि और योगी सारे तेरे ही गुण गाते हैं॥
छींटा दे दो ज्ञान का होश में आऊं मैं॥ तेरे दर को०
जो बीती सो बीती लेकिन बाकी उमर सम्भालूं मैं।
प्रेम पाश में बंधा आप के गीत प्रेम के गालूं मैं॥
सेवा करके देश की जीवन सफल बनाऊं मैं। तेरे दर को०

(३)

सच्चा तू करतार है, सब का पालन हार है।
तेरा सबको आसरा सुखों का भी भंडार है॥ सच्चा०
नदियां नाले और सब पर्वत तेरी याद दिलाते हैं।
ऋषि मुनी और योगी सारे तेरे ही गुण गाते हैं। सच्चा०
बादल गरजे बिजली चमके छम छम वर्षा आती है।
मीठी वाणी कोयल बोले यही राग सुनाती है। सच्चा०
शुद्ध आत्मा होगी उसकी ओं नाम जो ध्यावेगा।
जीवन सफल करेगा अपना अन्त नहीं पछतायेगा॥ स०
सत्य चित्त आनन्द प्रभु को वेदों ने बतलाया है।
अन्त तेरा न लाल ने पाया अद्भुत तेरी माया है॥ सं०

(४)

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

है जीत तुम्हारे हाथों में, है हार तुम्हारे हाथों में।
मेरा निश्चय है बस एक यही, इस बार तुम्हें पा जाऊं मैं
अर्पण करदूं जगती भर का सब प्यार तुम्हारे हाथों में ॥
या तो मैं जगसागर से दूर रहूं, या जग में रहूं तो ऐसे रहूँ
इस पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तुम्हारे में ॥
यदि मानुष का मुझे जन्म मिले मैं तब चरणोंका पुजारी रहूँ।
मुझ पूजक की इक २ रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में ॥
जब २ संसार का बन्दी बन, दरबार तेरे में आऊं मैं।
हो मेरे पापों का निर्णय, सरकार तुम्हारे हाथों में ॥
मुझ में तुझ में है भेद यही, मैं नर हूं तू नारायण है।
मैं हूं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ॥

५

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है ॥
उठ नींद से अंखियाँ खोल जरा, और अपनेप्रभुसे ध्यान लगा
ये प्रीत करन की रीत नहीं, प्रभु जागत है तू सोवत है।
जो कल करना है आज करले, जो आज करना है अब करले।
जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया, फिर पछताये क्या होवत है
नादान भुगत करनी अपनी ए पापी पाप में चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी शीष धरी फिर शीष पकड़ क्यों रोवत है

(६)

प्रभु के मिल के यश गावें, पिता वह ही हमारा।
वही है पूज्य हम सब का, वही सब का सहारा है ॥

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

न महिमा उसकी का पाया, किसी ने वार पारा है।
सकल ब्रह्माण्ड को रच कर, उसी ने एक धारा है॥
हुआ जो हो रहा होगा, उसी का सब पसारा है।
सभी के बस रहा अन्दर, सभी से वह न्यारा है॥
वो ज्योर्तिमय ही केवल है, तिमिर ना अन्धकारा है।
उसी के दान से सूर्य, चमकता चन्द्र तारा है॥
वही है ज्ञान का सागर, उसी में सत सारा है।
ज्ञानी सतवादी का, वही मित्र प्यारा है॥
पवित्र शुद्ध है निर्मल, वह शुद्धि करन हारा है।
धम का बल उसी से है, वही बल का भण्डारा है॥
वह करुणा रूप है स्वामी, उसी का सब आधारा है।
अधम अति पापियों को भी, भरोसा उस पर भारा है॥
गंवाया जन्म को निष्फल उसे जिसने बिसारा है।
लगा चरनन में उसके, जो जन्म उसने संवारा है॥
भुलावें काहे हम उसको, जो त्राता हम सभों का है।
भजा निशदिन उसे प्यारे, कि जिसका सब संसारा है॥

ओ३म् का अर्थ सहित जाप

ओ३म् सृजन हार है, सबका पालन हार कर्ता ॐ सहांर है
ओ३म् सत्य स्वरूप है ज्ञान स्वरूप है, आनन्द स्वरूप है।
ओ३म् सर्व व्यापक है, सब अन्तरयामी है, सर्वेश है।
ओ३म् सर्वाधार है सर्वदुख विनाशक है सब सुखों का दाता है
ओ३म् न्यायकारी है दयालु है करूणा का भण्डार है।
ओ३म् निराकार है निरविकार है महिमा अपरमपार है।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

रक्षक ओ३म हमारा है, सबका वोही सहारा है, ॐ ही
प्राण प्यारा है।
ओ३म् नाम जो ध्यायेंगे, वह जीवन सफल बनायेगें
फिर अन्त नहीं पछतायेंगें।
जो ओ३म की शरणी आयेंगें दुख दर्द सभी मिट जायेंगे
वह सभी सुखों को पायेंगे।
जो ओ३म की शरणी आवेगें वो जन्म मरण छुट जायेगें
वह सदा अमर हो जायेगें।

नोटः—एक २ पंक्ति की एक २ माला फेरनी हैं अर्थात दस पंकियों की दस मालायों का जाप करना है। अर्थ का विचार करके उस पर आचरण करना है। जप तीन प्रकार है -वाणी का. मन का, स्वास का
बिघन बाधायें विक्षेप और कलेश दूर होकर तुरन्त शान्ति प्राप्त होती है और जीवन सरल हो जाता है।

(८)

शरण प्रभु की आओ रे यही समय है प्यारे।
छल कपट और झूठको त्यागें, सत्य में चित्त लगाओ रे
उदय हुआ ओ३म नामका भानु, आओ दर्शन पाओ रे २
पान करो इस अमृत रस को, उत्तम पदवी पाओ रे ३
हरिकी भक्ति बिना नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमाओ रे४
मानुष जन्म अमोलक है येह, वृथा न इसे गवाओ रे ५

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कर लो नाम हरि का सुमिरण, अन्त को ना पछताओ रे ६
धन्य दया जो सब को पाले मत उसको बिसराओ रे ७
छोटे बड़े सब मिल के खुशी से, गुण ईश्वरका गावो रे ८

(६)

पितु मात सहायक स्वामी सखा, तुम्हीं इक नाथ हमारेहो।
जिनके कछु और आधार नहीं, तिनके तुम्हीं रखवारे हो॥
सब भांति सदा सुखदायक हो दुःख दुर्गण नाशकहारे हो।
प्रतिपाल करो सगरे जग की अतिशय करुणा उरधारे हो॥
उपकारण के कुछ अन्त नहीं छिन ही छिन जो विस्तारे हो।
महाराज महामहिमा तुम्हरी समझे विरले बुधवारे हो॥
शुभ शन्ति निकेतन प्रेम निधे मनमन्दिरके उजियारे हो।
इस जीवन के तुम जीवन हो इन प्राणन के तुम प्यारे हो।

(१०)

सारे बन्धन मेरे तोड़कर विषयोंसे मुख मेरा मोड़ दो।
पापों से मन मेरा हटा कर नेकी में दिल मेरा जोड़ दो॥
गन्दा मन्दा भरा है अन्दर मन मैला जो बना है न्दर।
सत्कर्मों में नहीं है लगता, मन्द कर्म से कभी न हटता॥
यत्न करूं पर पेश न जावे, जोरा जोरी खैंच ले आवे
सुख स्वादों में मुझे फंसाकर, ऐसा चस्का मुझे लगावे॥
सुध बुध मेरी सभी भुलाकर, दीन और दुनियां मेरी लुटावे

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

नरक में ऐसा मुझे फंसाकर, निकल सकूं ना होश ही आवे
दुःख पर दुःख ही रहूं जन्म भर, सुख का मांस यहां
फिर आवे ।

अब आया हूँ तेरे द्वार, तुम बिन कौन लगावे पार ।
करो दया अब दीन दयाल, डूबा जाता हूं मंझधार ॥
पार लगाओ पार लगाओ, अब तो भगवान पार लगाओ

(११)

मेरे हृदय में प्रभु आकर, अपना मन्दिर इसे बनाकर ।
अन्धकार अज्ञान मिटा कर, सारे संशय दूर भगाकर ।
निर्मल ज्ञान की ज्योति जगाकर भेद भावका भूत हटाकर।
सब में अपना रूप दिखाकर मुझको अपने पास बुलाकर ।
मेरा अपना मेल मिलाकर जीवन मेरा अमर बना कर
करो मेरा कल्याण ।

ओङ्कार है तेरो नाम गुण गावे संसार तमाम ।
तेरी महिमा गावें वेद, तेरे जपे न आवे खेद ॥
जिसने तुझसे नेह लगाया, तुमने उसको सुखी बनाया ।
जो कुछ मांगा सोई दिया है, आया संकट दूर किया है ॥
भक्त वत्सल हो सुनकर आया, इसीलिये हैजी ललचाया।
पूरीआस करो भगव न पूरी ....

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

भजन

आत्मा में गंग बहे क्यों नहीं मन नहावे
इन्द्रियों को जीत प्रीत ईश्वर से लावे,
पावे कहां वो परमधाम जो इन उन धावे। आत्मा
दानों को तूं दे ले दान सजनों का करले मान,
छड दे अभिमान प्राणी अतं काल खावे। आत्मा
सत्य का तूं कर व्यवहार जन्म को तूं ले सुधार
धुतता का डाल जाल पाप क्यों कमावे। आत्मा
भाई, बन्धु, मित्र नार बन में आवें तुझको डार
घूट जामें सब परिवार इक धर्म साथ जावे।"
नवल सिंग बार २ ईश्वर को तूं पुकार,
मनुष्य का शरीर फिर हाथ नहीं आवे।
आत्मा में— ....

भजन

तूं है सच्च, पिता सारे संसार का ओम प्यारा
तूं ही तूं ही है रक्षक हमारा।
चांद सूर्य, सितारे बनाये पृथ्वी आकाश पर्वत सजाये,
अन्न आया नहीं, तेरा पाया नहीं वार पारा। तूं ही
पक्षी गण राग सुन्दर है गाते, जीव जन्तु भी सर हैं झुकाते
उसको ही सुख मिला तेरी राह पर चला जो प्यारा। तूं
पाप पाखंड हमसे छुडायो वेद मार्ग पे हम को चलाओ,

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

लगे भक्ति में मन, करे संध्या हवन जगत सारा। तूं ही
अपनी भक्ति में मन को लगाना, 'लाल' दुखदर्द सारे मिटाना।
दुखियो कंगालो का और धनवानों का तू सहारा। तूं हीं

ठुकरा दो या प्यार करो

देव तुम्हारे कई उपासक कई ढंग से आते हैं,
सेवा में बहुमुल्य भेंट वे कई रंग की लाते हैं।
धूमधाम से साजबाज से वे मन्दिर में आते हैं,
मुक्तामणि बहुमूल्य वस्तुऐं लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं।
मैंही हूं इक गरीब ऐसी जो कुछ साथ नहीं स्वामी,
फिर भी साहस कर मन्दिर मेंपूजा करने को आई।
धूप दीप नेवैद्य नहीं हैं, झांकी काश्रगांर नहीं,
हाये गले में पहनाने को फूलों का भी हार नहीं।
मैं कैसे स्तुति करु तुम्हारी है स्वर में माधुर्य नहीं,
मन का भाव प्रकट करने को वाणी में चातुर्य नहीं।
नहीं दान है नहीं दक्षिणा, खाली हाथ चली आई,
पूजा की बिधि नहीं जानती, फिर भी नाथ चली आई।
पूजा और पुजाया प्रभुवर इसी पुजारिन को समझो,
दान दक्षिणा और नयोछावर, इसी भिखारिन को समझो।
मैं हूं उन्नमत प्रेम की लोभन, हृदय दिखाने आई हूँ,
जो कुछ है बस यही पासहै, इसे चढ़ाने आई हूँ।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

चरणों पर अर्पित है इसको, चाहो तुम स्वीकार करो
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है ठुकरा दो या प्यार करो।

भजन

हे भगवान दया के सागर सब के पालन हारे हो,
मात पिता बन्धु हितकारी स्वामी सखा हमारे हो।
प्राण दान देकर तुम प्रभु जी जग का पालन करते हो,
करुणा का शुभ स्रोत बहा कर सारे संकट हरते हो।
दीन बन्धु हम आर्त जनों को बल बुद्धि प्रदान करो,
देश प्रेम की जोत जगा कर सब को साहस दान करो।
सदाचार का पाठ पढ़े हम सेवा का सन्मार्ग गहें,
विनयी, श्रमी विवेकी बनकर दर-अभिमान से दूर रहें।
दीना नाथ यही है विनती करुणा कर स्वीकार करो।
शरण आपकी आये हैं हम; हे प्रभु बेड़ा पार करो।

उलाहना

क्यों दीना नाथ मुझ पे तेरी दया नहीं,
आशरे तेरे नहीं हूं कि प्रजा तेरी नहीं।
मेरा तो नाथ कोई तेरे बिना नहीं,
माता नहीं है बन्धु नहीं है पिता नहीं।
माना कि मेरे पाप [illegible] हैं बड़े प्रभु,

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

कुछ उनसे न्यूनतर तो तुम्हारी दया नहीं।
करुणा करोगे क्या मेरे आंसु ही देख कर.
दिल का भी मेरे हाल नहीं तुमसे छिपा नहीं।
तुम भी शरण न दोगे तो जाऊंगा मैं कहां,
अच्छा हूं या बुरा हूं किसी और का नहीं

भजन

हे जगत स्वामी प्रभु जी भेंट धरूं क्या मैं तेरी
(१) माल नहीं मेरे सम्पदा नाहीं जिसको कह मैं तेरी
इस जग में हम ऐसे बिचरे जोगी करे ज्यों फेरी। हे…
(२) धन जन यौवन अपना माने, मूर्ख भला भारी
तुम बिन और सहाई न मेरा, देख लिया मैं बिचारी। हे…
(३) यह मन यह तन है ये न अपना, है सब माल तुम्हारा
जब चाहे तब ही तू लेवे नहीं कुछ जोर हमारा। हे…
(४) तुम्हरे दर का मैं सेवक स्वामी लगन मुझे है तेरी
प्रानी शरण में मुझ को रखकर देयो भक्ति दिन ते ी। हे…

भजन

हे दीन बन्धु हे करुणासिंधु, संसार सागर से करो पार बेड़ा
हूं और अंधकार सूझत न वार पार, उलटी पवन नाव
फटी आय घेरा। हे

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

राखोनाथ राखो नाथ डूबनी को दीजो हाथ, पीछा रहा
दूर आया आगा नेड़ा। हे…
अपने अधीन दीन को देखयो दिशा हीन, सुख से उतारो
पार, मिटे यह विखेड़ा। हे…

भजन

क्या कोई गावे सुनावे प्रभु, महिमा तेरी लखी किसी
से न जावे।
रिखी रखीश्वर, तपी तपीश्वर मुनी मुनीश्वर हजार,
लख २ के हारे वो सारे वेचारे, न पाया वले तेरा पार। क्या
तेरी वेद है बाणी कहें ऋषी ज्ञाणी, है प्राणी
का इससे उधार,
जो पढ़े पढ़ावे और अमल कमावे, वो हो भव
सागर से पार। क्या
तूं ही सृष्टी करता सकल दुख का हरता, सतंन
का प्रतिपाल,
मुझे काम क्रोध खुदी लोभ मोह से बचाओ मेरे करतार। क्या
तूं ही है भंडारी, मैं तेरा भिखारी, मांगू यही बरदान,
मैं तुझ को ही ध्याऊं, तेरी महिमा गाऊं, कहे दास
'मला' नादान। क्या कोई

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दोहे

(१) तु सी मीठे बचन से सुख उपजे चहूँ ओर,
वशी करण यह मंत्र है तज दे बचन कठोर।
(२) चार वेद खट शास्त्र में बात मिली हैं दो,
दुख दीने होत है सुख दीने सुख हो।
(३) ग्रन्थ पन्थ सब जगत को बात बतावत तीन।
राम हृदय, मन में दया. तन सेवा में लीन,
(४) च्यूंटी से हस्ती तलक, जितने लघु गुर देह,
सुब को सुख देवो सदा. परम भक्ति है यह।
(५) सीस सफल सन्तन नमै, हाथ सफल हरि सेव,
पांव सफल सत्संग गत, तब पावे कुछ भेव।
(६) नारायण दो बात को. दीजो सदा विसार,
करि बुराई और ने, आप कियो उपकार।
(७) तेरे भावें जो करो, भलो बुरो सन्सार,
नारायण चुप बैठ के, अपना आप सवार।
(८) न मजुस हो, उससे उम्मीदवार,
उसे कर्म करते नहीं लगती वार।

चौपाई

बिन सत्संग विवेक न होई,
राम कृपा बिन सुलभ न सोई ।।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे ॥
जो ध्यावे फल फल पावे, दुःख विनसे मनका ।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥
मात पिता तुम मेरे शरण पड़ूं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा आश करूं जिसकी ॥
तुम पूर्ण परमात्मा तुम अन्तर्यामी ।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी ॥
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता ।
मैं मूरख खल स्वामी कृपा करो भर्ता ॥
तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति ।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको दुर्मति ॥
दीनबन्धु दुःख हर्ता तुम रक्षक मेरे ।
करुणा हाथ बढ़ाओ द्वार पड़ा तेरे ॥
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा ॥

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

(१३)

ओ३म् जय जगदीश पिता, प्रभु जय जगदीश पिता।
विश्व विरञ्चि विधाता जगत्राता सविता ॥ओं॥
अनन्त अनादि अ[illegible] अ[illegible] अविनाशी।
[illegible] सनातन स्वामी, शंकर सुखराशी ॥
सेवक जन सुखदायक जन नायक तुम हो।
शुभ [illegible] शान्ति सुमंगल, वर दायक तुम हो ॥ओं॥
मैं सेवक शरण गत, तुम मेरे स्वामी।
हृदय पटल में प्रगटो, प्रभु अन्तर्यामी ॥ओं॥
काम, क्रोध, मद, मोह, [illegible], छल, व्यापे नहीं मन में।
लगन लगी मोरे मन की, तव गुण वर्णन में ॥ओं॥
नित्य निरंजन निशदिन, तेरा जाप करें।
[illegible] से स्वामी तीनों ताप हरें ॥ओं॥
[illegible] तारण, शरणागत तेरा।
[illegible] भ्रम में, निर्मल मति मेरी ॥ओं॥
शुद्ध [illegible] से मन में, तेरा वरण करें।
सब [illegible] छल बल तज कर, तेरी शरण पड़ें ॥ओं॥

★ समाप्त ★

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri